

# Psychology ( मनोविज्ञान )

**Super Tet / TET / CTET / SSC / RAILWAY/ UPP / Upsssc etc**

**बेहतरीन हस्तलिखित नोट्स पैकेज सभी विषयों**

**से संबंधित वाट्स अप संपर्क सूत्र: +916393339535**

**BY MANISH SIR**



**+91639333953**



# Psychology (मनोविज्ञान)

प्राचीन काल में मनोविज्ञान को 'दर्शनशास्त्र' विषय के रूप में जाना जाता था।



**YOUTH FOR STUDY**

Er. Manish Sir

Wtsup No.- 6393339535

- मनोविज्ञान के जनक - अरस्तू
- आधुनिक मनोविज्ञान के जनक - विलियम जेम्स
- मनोविज्ञान शब्द की उत्पत्ति - रौडल्फ गोयकल (1590)
- मनोविज्ञान की संरचना - विलियम जेम्स (1890)

The Principles of Psychology is an 1890 book about psychology by William James, an American philosopher and psychologist

Psychology शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है।

Psycho + Logos

Psycho — आत्मा

Logos — अध्ययन

आत्मा का अध्ययन

- 16 वीं शताब्दी - 'आत्मा का विज्ञान'  
समर्थक - अरस्तू, प्लेटो, डेकार्ट
- 17 वीं शताब्दी - 'मन / मस्तिष्क का विज्ञान'  
समर्थक - पोम्पानॉजी (इटली)
- 19 वीं शताब्दी - 'चेतना का विज्ञान'  
समर्थक - i) विलियम वुण्ट (जर्मनी)  
ii) विलियम जेम्स (U.S.A.)  
iii) जेम्स सल्ली  
iv) वाइल्स

सम्पूर्ण पैकेज के  
लिए सम्पर्क करें  
6393339535

**YOUTH FOR STUDY**  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

20 वीं शताब्दी - 'व्यवहारवाद'

जनक - जे. बी. वॉटसन

समर्थक - स्टेनले हॉल (U.S.A.)

- वुडवर्थ

- रिक्नर (U.S.A.)

- पावलाव (रूस)

- थार्नडाइक (U.S.A.)

- हल

मनोविश्लेषण के जनक - सिगमंड फ्रायड (ऑस्ट्रिया - 1900)

समर्थक - युंग, रडर

इन्होंने उमन बगाने हैं -

YOUTH FOR STUDY

Er. Manish Sir

Wtsup No.- 6393339535

1. चैतन मन (1/10)

2. अर्द्धचैतन मन

3. अचैतन मन (9/10)

- वुडवर्थ के अनुसार -

" मनोविज्ञान ने सर्वप्रथम अपनी 'आत्मा' का परित्याग किया, फिर अपने 'मन' का, फिर अपनी चेतना का वर्तमान में एक प्रकार के व्यवहार के रूप में सजीये हुये हैं।



+916393339535



## बाल मनोविज्ञान

बालक के व्यवहार में अनेक पक्ष, अनेक विचारों और अनेक भेद होते हैं उन सभी का अध्ययन बाल मनोविज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है।

- क्रो सण्ड क्रो के अनुसार -

" बाल मनोविज्ञान एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन है जन्म के पूर्व काल से लेकर किशोरावस्था तक का अध्ययन किया जाता है।"

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

### बाल विकास का अर्थ

बाल विकास से आशय शिशु के **गर्भाधान** से लेकर पूर्ण '**पौढ़ता**' प्राप्त करने की स्थिति से है। पितृसूत्र एवं मातृसूत्र के संयोग से एक जीव उत्पन्न होता है यह विकास की प्रक्रिया लगातार चलती रहती है। इसी के फलस्वरूप बालक विकास की विभिन्न अवस्थाओं से गुजरता है।

### बाल विकास की अवस्थाएँ

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने बाल विकास की मुख्य रूप से 3 अवस्थाएँ बतायी हैं।

1. शैशवावस्था - (0-6)
2. बाल्यावस्था - (6-12)
3. किशोरावस्था - (12-18)

Manish Sir



## शैशवावस्था

मानव जीवन में विकास की सभी अवस्थाओं में शैशवावस्था का महत्व सबसे अधिक है इस समय बालक को जो कुछ भी सिखाया जाता है उसका प्रभाव तुरन्त पड़ता है। इस समय सीखने व समझने की अधिकता अपने चरम पर होती है।

**YOUTH FOR STUDY**

Er. Manish Sir

Wtsup No.- 6393339535



### परिभाषाएँ -

- न्यूमैन के अनुसार - "5 वर्ष की अवस्था शरीर तथा मस्तिष्क के लिये अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है।"
- सिगमण्ड फ्रॉयड के अनुसार - "मानव शिशु जो बनता है वह जीवन के प्रारम्भिक 4-5 वर्षों में बन जाता है।"
- क्रो रण्ड क्रो के अनुसार - "20 वीं सदी को बालक की शताब्दी कहा है।"
- वैलेंटायन के अनुसार - "शैशवावस्था को सीखने का आदर्शकाल कहा है।"  
+ 639 333 95 35 +
- रुडलर के अनुसार - "शैशवावस्था द्वारा जीवन का पूरा क्रम निश्चित होता है।"
- मैकडूगल के अनुसार - शैशवावस्था में 4 प्रकार के संवेग पाये जाते हैं।



## बाल्यावस्था (6-12)

इस अवस्था को बालक का निर्माणकारी काल कहा जाता है। इस काल में व्यक्तिगत सामाजिक शिक्षा, सम्बन्धी व्यवहार स्वभावों, इच्छाओं के प्रतिस्पर्धों का निर्माण कर लेता है। आगे चलकर इन्हें परिवर्तित करना सरल नहीं होता।

### बाल्यावस्था की विशेषताएँ

1. संन्य की प्रवृत्ति
2. जीवन का अन्तर्वाकाल
3. मूर्त चिन्तन की प्रवृत्ति
4. समूह की आयु
5. गन्दी आयु
6. चुरती / स्फूर्ति की आयु
7. मिथ्या परिपक्वता की आयु
8. निर्माणकारी अवस्था
9. सुनहरी अवस्था
10. सामाजिक गुणों का विकास
11. आधिगम में तीव्रता
12. प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश की आयु
13. बहिर्मुखी व्यक्तित्व का विकास
14. यथार्थवादी दृष्टिकोण



Manish Sir

रॉस के अनुसार -

"बाल्यावस्था को मिथ्या परिपक्वता की आयु कहा जाता है।"



1. भय
2. क्रोध
3. प्रेम
4. पीड़ा

सिगमण्ड फ्रॉमड के अनुसार - इन्होंने 2 मूल प्रवृत्तियाँ बतायी।

1. जीवन मूल (इरोस)
2. मरण मूल (थैनाटोस)

- इलेक्ट्रा ग्रंथि - (लड़कियों में)
- ओडीपस ग्रंथि - (लड़कों में)

इन्हीं ग्रंथियों के कारण लड़के माता से एवं लड़कियाँ पिता से अधिक प्रेम करती हैं।

शैशवावस्था की विशेषताएँ

1. मूल प्रवृत्त्यात्मक व्यवहार
2. अनुकरण की भावना
3. आत्मप्रेम की भावना
4. नैतिकता की भावना का अभाव
5. सीखने का आदर्शकाल
6. शारीरिक विकास में तीव्रता
7. आबी जीवन की आधारशिला
8. मानसिक विकास में तीव्रता
9. विश्वास की प्रबलता
10. सामाजिक भावना का विकास प्रारम्भ





- स्टेनले हॉल के अनुसार -

"किशोरावस्था बड़े संघर्ष, तनाव, क्रोध व तूफान की अवस्था है।"

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

- पिंग एवं हण्ट के अनुसार -

"किशोरावस्था को सर्वोत्तम रूप से व्यक्त करने वाला एक शब्द है परिवर्तन।"

- वैलेन्टाइन के अनुसार -

"किशोरावस्था अपराध प्रवृत्ति के विकास का नाजुक समय है।"

- स्टेनले हॉल के अनुसार -

"किशोरावस्था एक नया जन्म है इसी में उच्चतर, श्रेष्ठतर मानव की विशेषताओं के दर्शन होते हैं।"

- बी. एन. झा के अनुसार -

"किशोर अपने आपको आप को बचाने से मुक्त करना चाहता है।"

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

- स्टेनले हॉल के अनुसार -

"किशोरावस्था एक नया जन्म है जिसमें श्रेष्ठतर एवं उच्चतर मानव विशेषताओं के दर्शन होते हैं।"

## किशोरावस्था में विकास के सिद्धान्त

1. आकस्मिक विकास का सिद्धान्त - स्टेनले हॉल
2. क्रमशः विकास का सिद्धान्त - भार्नडाइक



## किशोरावस्था (12-18)

मानव विकास की सबसे विचित्र एवं जटिल अवस्था किशोरावस्था है इसमें होने वाले परिवर्तन का बालक के कथन में महत्वपूर्ण भूमिका है।

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

- किशोरावस्था को सर्वोत्तम रूप से व्यक्त करने वाला एक शब्द है - **परिवर्तन (Adolescence)**

- Adolescence शब्द लैटिन भाषा के Adolescere से लिया गया जिसका अर्थ है - **परिपक्वता की ओर आगे बढ़ना।**

**Book - Adolescence - (स्टेलने हॉल) U.S.A.**

हैंडो कमेटी किशोरावस्था से सम्बन्धित है इसकी रिपोर्ट से कहा गया है कि 11 व 12 वर्ष की अवस्था में बालक की नशी में एक ज्वार सा उठने लगता है, यदि ज्वार की बाढ़ को समय पर ही उपयोग किया जा सके तो वह भाग्यशीलता की ओर जायेगी।

### परिभाषाएं -

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

Manish Sir

- किल्पैट्रिक के अनुसार -

"किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल है।"

- क्रौण्ड क्रो के अनुसार -

"किशोर ही वर्तमान की शक्ति और भावी आशा को प्रस्तुत करता है।"



## किशोरावस्था की विशेषताएँ

- जीवन का सबसे कठिन काल
- अमूर्त चिंतन की अवस्था
- आत्म सम्मान की भावना
- विषमलिंगी काम भावना
- धार्मिक विचारों का उदय
- स्वभाविकता का विकास
- सामाजिक स्वीकृति की अवस्था
- मानव जीवन का वसंत काल
- समाज सेवा की भावना
- वीर पूजा की भावना
- स्वतंत्रता व विद्रोह की भावना
- मादक वस्तुओं के सेवन की अवस्था
- कल्पना का बाहुल्य

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

डा० अर्नेस्ट जोन्स के अनुसार - "दबी हुई काम भावना किशोरावस्था में भड़क उठती है आत्म प्रेम, समलिंगी प्रेम, विषम प्रेम सभी तेजी से बढ़ते हैं।"





बुद्धि वह मानसिक शक्ति है जो वस्तुओं एवं तथ्यों को समझने, उनमें उपायसी सम्बन्ध खोजने तथा तर्कपूर्ण ज्ञान प्राप्त करने में सहायक होती है। बुद्धि ही व्यक्ति को नवीन परिस्थितियों को ठीक से समझने और उसके साथ अनुकूलित होने में सहायता करती है।

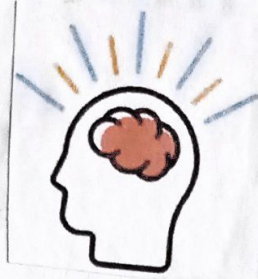
## परिभाषायें -

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

- अल्फ्रेड बिने के अनुसार - " बुद्धि बोध पर आधारित है। "
- लुडवर्ग के अनुसार - " बुद्धि कार्य करने की एक विधि है। "
- टरमन के अनुसार - " बुद्धि अमूर्त चिन्तन की क्षमता है। "
- बंकिम के अनुसार - " बुद्धि सीखने की योग्यता है। "
- मैन्डूगल के अनुसार - " बुद्धि अतीत के अनुभवों के आधार पर जन्मजात प्रवृत्तियों को सुधारने की क्षमता है। "
- स्टर्न के अनुसार - " जीवन की नवीन समस्याओं के प्रति समाधान करने की सामान्य चेतन क्षमता ही बुद्धि है। "



## बुद्धि के प्रकार



बुद्धि तीन प्रकार की होती है।

### थार्नडाइक के अनुसार

1. अमूर्त बुद्धि
2. सामाजिक बुद्धि
3. यांत्रिक बुद्धि

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

### गैरेट के अनुसार

1. मूर्त बुद्धि
2. अमूर्त बुद्धि
3. सामाजिक बुद्धि

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

#### 1. अमूर्त बुद्धि -

पुस्तकीय ज्ञान के प्रति अपने को व्यवस्थित करने की योग्यता अमूर्त बुद्धि है।

#### 2. सामाजिक बुद्धि -

अपने को समाज के अनुकूल व्यवस्थित करने की योग्यता सामाजिक बुद्धि कहता है। परस्पर सद्भाव सहयोग, सद्व्यवहार तथा अन्य रुचियों के ज्ञान सामाजिक कार्य में भाग लेना सामाजिक बुद्धि है।

#### 3. यांत्रिक बुद्धि (अमूर्त) -

व्यक्ति में यह योग्यता यंत्रों



तथा मशीनों के साथ अनुकूलन की योग्यता है। इसी के आधार पर व्यक्ति कारीगर, चालक, मिस्त्री, इंजीनियर आदि बन सकता है।

## बुद्धि परीक्षण



### 1. सामूहिक बुद्धि परीक्षण -

1916 में प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान यह परीक्षण U.S.A. से प्रारम्भ हुआ। इसके अन्तर्गत निम्न परीक्षण किये जाते हैं।

1. सामूहिक शब्दिक बुद्धि परीक्षण - [आर्मी अल्फा टेस्ट]
2. सामूहिक अशब्दिक बुद्धि परीक्षण - [आर्मी बीटा टेस्ट]  
[शिकागो क्रियात्मक परीक्षण]

### 2. व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण - [1905]

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

#### 1. व्यक्तिगत शब्दिक बुद्धि परीक्षण - [भाषात्मक बुद्धि परीक्षण]

- बिने-साइमन बुद्धि परीक्षण
- स्टेफोर्ड बिने बुद्धि परीक्षण

#### 2. व्यक्तिगत अशब्दिक बुद्धि परीक्षण

- भूलभुलैया बुद्धि परीक्षण - (3-प्रौढ़ावस्था तक) (पोर्टेपस)
- चित्रपूति परीक्षण
- चित्रांकन परीक्षण (4-10 वर्ष)



## बुद्धि लब्धि एवं उसका मापन

बुद्धि लब्धि बालक में स्थिर बुद्धि की मात्रा का मापन है।  
स्टर्न एवं कोहलमैन ने 1912 ई. में मानसिक आयु के बदले  
बुद्धि - लब्धि की विधि खोजी। बुद्धि लब्धि शब्द का प्रयोग  
सर्वप्रथम 1916 ई. में टर्मेन के द्वारा हुआ।

बुद्धि लब्धि ज्ञात करने का सूत्र -

$$\text{बुद्धि लब्धि} = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$$

## बुद्धि लब्धि का विभाजन

टरमेन एवं मैरिल के अनुसार बुद्धि लब्धि का विभाजन -

|     |             |   |                    |
|-----|-------------|---|--------------------|
| Imp | 140 से अधिक | - | प्रतिभाशाली बुद्धि |
|     | 130 से 139  | - | अति श्रेष्ठ बुद्धि |
|     | 120 से 129  | - | श्रेष्ठ बुद्धि     |
|     | 110 से 119  | - | प्रखर बुद्धि       |
|     | 90 से 109   | - | सामान्य बुद्धि     |
|     | 80 से 89    | - | मंद बुद्धि         |
|     | 70 से 79    | - | हीन बुद्धि         |
|     | 70 से कम    | - | जड़ बुद्धि         |





## महत्वपूर्ण बिन्दु

- विश्व का प्रथम बुद्धि परीक्षण 1905 ई. में साइमन स्वं बिने के द्वारा किया गया।
- भारत का प्रथम बुद्धि परीक्षण 1922 ई. में C.H. राइस के द्वारा किया गया।
- विश्व की प्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला की स्थापना 1879 ई. में विलियम वुण्ट के द्वारा जर्मनी के लिपज़िंग शहर में स्थापित की गयी।
- भारत की प्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला की स्थापना 1916 ई. में डा. N.N. सेन गुप्ता के द्वारा कोलकाता विश्वविद्यालय में की गयी।
- पंजाब विश्वविद्यालय के प्रो. S जलोटा ने सामूहिक बुद्धि परीक्षण या साधारण मांसिक योग्यता का निर्माण 1957 ई. में किया। (5-16 वर्ष)
- भारिया बैटरी परीक्षण डा. C.M. भारिया द्वारा प्रतिपादित किया गया यह परीक्षण Bhatiya Battery of Performance test of intelligence भी कहा जाता है।
- सन् 1943 ई. में मनोवैज्ञानिक सौहनलाल ने 11 वर्ष या इससे अधिक आयु वाले बालको के लिये सामूहिक बुद्धि परीक्षण का निर्माण किया।

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535



# बुद्धि के सिद्धान्त

## एक खण्ड / एक कारक बुद्धि का सिद्धान्त -

प्रतिपादक - बिने, साइमन, स्टेन, टरमन

## द्विकारक बुद्धि के सिद्धान्त -

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

प्रतिपादक - स्पियरमैन (ब्रिटैन 1904)

- सामान्य कारक (G factor)
- विशिष्ट कारक (S factor)

## त्रिकारक बुद्धि के सिद्धान्त -

प्रतिपादक - स्पियरमैन (1911)

- सामान्य कारक
- विशिष्ट कारक
- समूह कारक

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

- समूह कारक का अपना कोई आस्तित्व नहीं है ये G factor व S factor का योग है।

## समूहकारक बुद्धि का सिद्धान्त - (1937)

प्रतिपादक - थर्स्टन / केली

- प्रारम्भ में 7 कारक थे बाद में संशोधन किया गया है वर्तमान में 9 कारक हैं।



1. शारीरिक उत्तम क्षमता
2. अंक प्रवाह क्षमता
3. स्थान संबंधी क्षमता
4. आंकिक क्षमता
5. तार्किक क्षमता
6. स्मृति क्षमता
7. प्रत्यक्ष सम्बन्धी योग्यता
8. निगमन - आगमन सम्बन्धी योग्यता
9. समस्या समाधान सम्बन्धी योग्यता

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

### पदानुक्रमिक बुद्धि का सिद्धान्त -

जनक - **बर्ट / फिलिप वर्नर**

- इन्होंने बुद्धि के दो प्रकार बताये हैं।

1. सामान्य मांसिक योग्यता
2. विशिष्ट मांसिक योग्यता

### तरल ठोस बुद्धि का सिद्धान्त -

जनक - **R.B. कैटेब**

- तरल - वंशानुक्रम - जन्मजात योग्यता
- ठोस - वातावरण - अर्जित योग्यता

### न्यायदर्श एवं प्रतिदर्श बुद्धि का सिद्धान्त -

जनक - **थॉमसन**



## त्रितत्व बुद्धि का सिद्धान्त -

जनक - **राबर्ट स्टैनबर्ग**

- इन्होंने बुद्धि के तीन तत्व बताये हैं।

1. विश्लेषणात्मक बुद्धि
2. स्तब्धनात्मक बुद्धि
3. व्यवहारात्मक बुद्धि

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

## बहुकारक बुद्धि का सिद्धान्त -

जनक - **थार्नडाइक (U.S.A.)**

थार्नडाइक ने स्पियरमैन के द्विकारक सिद्धान्त का खण्डन करते हुये कहा है कि बुद्धि 9 व 5 स्थल के मिलने के कारण नहीं बनी बल्कि बुद्धि बहुत से कारको से मिलकर बनी है इसी सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि असंख्य स्वतंत्र कारको से मिलकर बनी है।

## बहुबुद्धि सिद्धान्त । बहु विमात्मक प्रज्ञा -

जनक - **होवर्ड गार्डनर (U.S.A.)**

- इन्होंने बुद्धि के 8 प्रकार बताये हैं।

1. भाषागत बुद्धि
2. तार्किक (गणितीय बुद्धि)
3. देशिक बुद्धि
4. संगीतात्मक बुद्धि
5. शारीरिक गति संवेदी बुद्धि

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535



उपयोग किया जाता है उसे विषयवस्तु कहते हैं।  
विषय वस्तु के अन्तर्गत 4 कारक आते हैं।

1. आकृति / आकाशत्मक
2. सांकेतिक / प्रतीकात्मक
3. शाब्दिक / अर्थगत
4. व्यवहारिक / व्यवहारात्मक

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

1980 से 2 कारक और जोड़ दिये गये।

1. दृष्टिपरक
2. श्रवणपरक

### 3. उत्पाद -

संक्रिया द्वारा विषयवस्तु को लेकर जिस प्रकार की बौद्धिक प्रक्रिया की जाती है। इसके परिणाम स्वरूप हमें उत्पाद प्राप्त होते हैं।

इसके अन्तर्गत 6 कारक होते हैं।

1. इकाईयां
2. श्रेणी
3. सम्बन्ध
4. पद्धति
5. रूपान्तरण
6. आशय

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535



# अधिगम



अधि + गम

↓

↓

(उपसर्ग + प्राप्त करना)

Knowledge

(ज्ञान)

Behaviour

(व्यवहार)

Believe

(विश्वास)

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

- ज्ञान में परिवर्तन ही 'सीखना' है।
- व्यवहार में परिवर्तन ही 'सीखना' है।
- विश्वास में परिवर्तन ही 'सीखना' है।

## अधिगम के प्रमुख घटक -

1. उद्दीपक
2. अनुक्रिया
3. पुनर्बलन
4. अभिप्रेरणा

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

Manish

अधिगम शब्द अंग्रेजी भाषा के Learning शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। जिसका सामान्य रूप से शाब्दिक अर्थ 'आगे की ओर बढ़ना' है।

क्रो ६ क्रो के अनुसार -

"अधिगम, आदतों, ज्ञान और

अभिवृत्तियों का अर्थ है।"



बुडवर्ष के अनुसार - " नवीन ज्ञान और नवीन प्रतिक्रियाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया आधिगम है । "

स्किनर के अनुसार - " सीखना व्यवहार में उत्तरोत्तर, सामंजस्य की प्रक्रिया है । "

J. P. गिलफोर्ड के अनुसार - " व्यवहार के कारण व्यवहार में परिवर्तन ही सीखना है । "

गैट्स एवं अन्य के अनुसार - " अनुभव एवं प्रशिक्षण के द्वारा होने वाले परिवर्तन ही सीखना है । "

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

## सीखने के नियम

थार्नडाइक के अनुसार सीखने के दो नियम हैं ।

### मुख्य नियम -

1. तत्परता का नियम
2. अभ्यास का नियम
3. प्रभाव का नियम

### गौण नियम -

1. विविध प्रतिक्रिया / बहुप्रतिक्रिया का नियम
2. सन्निवृत्ति या अभिवृत्ति का नियम



3. वर्णनात्मक अनुक्रिया या आंशिक अनुक्रिया का नियम
4. आत्मीकरण / आत्मसांत का नियम
5. साहचर्य परिवर्तन / संबन्धित परिवर्तन का नियम

## अधिगम के प्रकार

1. ज्ञानात्मक अधिगम
2. संवेदनात्मक अधिगम
3. गामक अधिगम

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

## अधिगम के सिद्धान्त

- शास्त्रीय अनुबंधन का सिद्धान्त or
- अनुकूलित अनुक्रिया का सिद्धान्त or
- सम्बन्ध प्रतिक्रिया का सिद्धान्त or
- अनुकूलित प्रत्यावर्तन का सिद्धान्त or

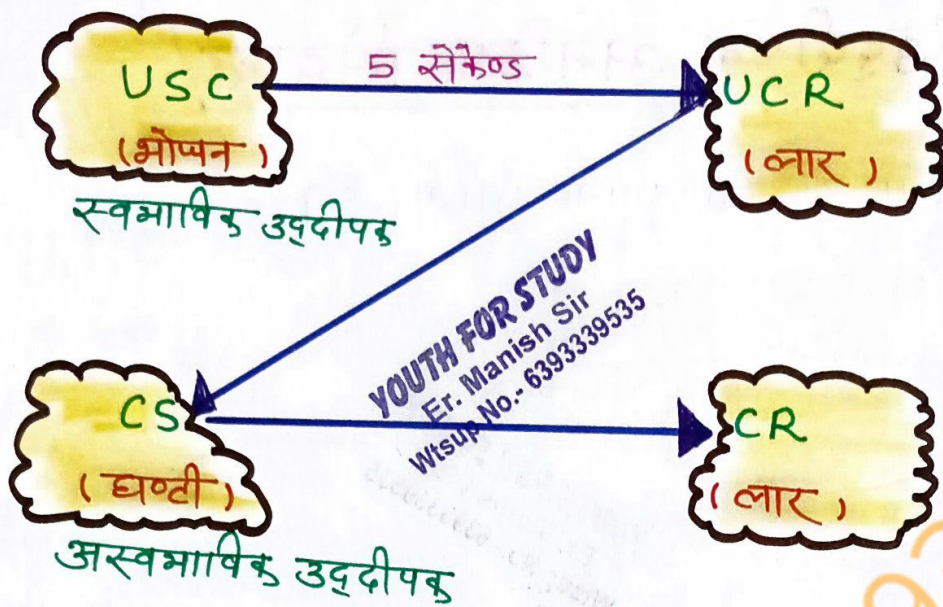
YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

[Classical Conditioning theory of learning]

प्रतिपादक - इवान पेट्रोविच पॉवलाव (रूस)

प्रयोग का विषय - कुत्ता





U - Unconditional - (स्वभाविक)  
 S - Stimulus - (उद्दीपक)  
 C - Conditional - (अनुबन्धित)  
 R - Response - (अनुक्रिया)



- जब भोजन को एक निश्चित समय में कुत्ते के सामने न प्रस्तुत किया जाये तो इस क्रिया का विलोपन हो जायेगा।
- अनुबन्धन के सिद्धान्त के अन्तर्गत एक बच्चे पर प्रयोग किया - **ज. B. वॉटसन** ने।
- पावलाव मनोवैज्ञानिक बनने से पहले एक चिकित्सा-शास्त्री के रूप में कार्य करते थे। चिकित्सा के क्षेत्र में पाचन क्रिया पर कार्य करने के लिये 1904 ई० में इन्हें चिकित्सा के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार दिया गया।
- 50 वर्ष की आयु में मनोवैज्ञानिक के रूप में पहला प्रयोग कुत्ते पर किया।

YOUTH FOR STUDY  
 Er. Manish Sir  
 Wtsup No.- 6393339535



# उद्दीपक अनुक्रिया सिद्धान्त

इसे अन्म नामो से भी जाना जाता है।

- प्रयत्न एवं भूल का सिद्धान्त
- प्रयास एवं त्रुटि का सिद्धान्त
- S-R बंध
- बंध सिद्धान्त
- Bond theory
- Stimulus Response theory

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

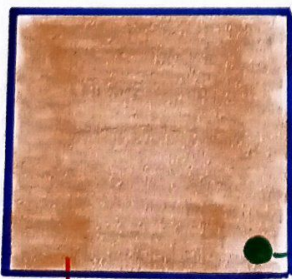
प्रतिपादक - रडवर्ड L. थार्नडाइक - (U.S.A.)

प्रयोग का विषय - भूखी बिल्ली (100 बार प्रयोग किया)

## Books -

- The Psychology of learning - 1913
- Education of a first book - 1912
- Animal Intelligence - 1898
- An Introduction to theory of mental & social measurement. - 1904

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535



भोजन  
(उद्दीपक)

लीवर बटन

उछलना कूदना



अधिगम की प्रक्रिया में 1913 ई. में सडवर्ड L थार्नडाइक ने 'उद्दीपक अनुक्रिया सिद्धान्त' का प्रतिपादन किया। इस सिद्धान्त में उन्होंने उद्दीपक और अनुक्रिया को सहत्वपूर्ण माना साथ ही यह भी बताया कि इन दोनों के मध्य जो सम्बन्ध बन जाता है उसे S-R बन्ध या सम्बन्धवाद कहा जाता है।

• सम्बन्धवाद के जनक - सडवर्ड L. थार्नडाइक हैं।

- इन प्रयोग के आधार पर थार्नडाइक ने विशिष्ट उद्दीपक तथा विशिष्ट अनुक्रिया के मध्य अधिगम में सम्बन्ध स्थापित किया।

## क्रिया प्रसूत अनुबन्धन का सिद्धान्त

इसके भी अन्य नाम हैं।

- सक्रिय अनुबन्धन का सिद्धान्त
- अनुकूलन का सिद्धान्त
- नैमित्तिक अनुबन्धन का सिद्धान्त
- अभिक्रमायोजित अधिगम
- साधनात्मक / यंत्रिक अनुबन्धन का सिद्धान्त
- R-S बन्ध
- [Instrumental Conditioning theory]

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

Manish

प्रतिपादक - B.F. स्किनर (U.S.A.)

प्रतिपादन - 1932



- प्रयोग का विषय - सफेद चूहा, कबूतर

### Books -

The behaviour of Organism.

Beyond freedom and Dignity.

- व्यवहारवादियों की श्रेणी में स्किनर का नाम प्रमुख रूप से जाना जाता है।

### व्यवहार के प्रकार

- प्रतिक्रियात्मक व्यवहार - कबूतर पर प्रयोग
- सक्रिय व्यवहार - चूहा पर प्रयोग

- अधिगम की प्रक्रिया में थार्नडाइक के प्रभाव के नियम के आधार पर स्किनर ने क्रिया प्रसूत अनुबन्धन के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। स्किनर के अधिगम सम्बन्धी विचारों का प्रचार-प्रसार 1932 के लगभग होने लगा।

- चूहे पर किये गये प्रयोग के आधार पर मिलने वाला रोटी का टुकड़ा उद्दीपक के रूप में प्रस्तुत हुआ।



# सूक्ष्म या अन्तर्दृष्टि का सिद्धान्त

प्रतिपादक - अल्फांग कोह्लर (जर्मनी)

प्रयोग - चिम्पैंजी (सुल्तान)

विचारधारा - गेस्टाल्टवाद

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

- गेस्टाल्टवाद विचारधारा के प्रवर्तक 'मैक्सवर्दीमर' हैं।

समर्पक - कोह्लर, कुप्फा, कुर्टलेविन हैं।

गेस्टाल्टवाद शिक्षण विधि -

'पूर्ण से अंश की ओर हैं।'

- सूक्ष्म या अन्तर्दृष्टि के प्रतिपादक अल्फांग कोह्लर हैं यह जर्मनी के रहने वाले हैं। यह सिद्धान्त गेस्टाल्टवादी विचारधारा की देन है।

- गेस्टाल्ट का अर्थ - पूर्ण या समग्र है।
- गेस्टाल्ट जर्मन भाषा का शब्द है।

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

- जब किसी समस्या का निराकरण करते समय अचानक ही कोई हल आ जाता है तब प्रत्यक्षीकरण में तीव्र गति से होने वाला परिवर्तन सूक्ष्म कहलाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार कोई भी बालक प्रमत्त रूप से भूल के माध्यम से नहीं सीखता बल्कि सम्पूर्ण परिस्थितियों को स्फूर्ति करके अपनी मानसिक शक्ति और सूक्ष्म से सीखता है।



इस सम्प्रदाय में बालको के समक्ष समस्या को छोटे-2 टुकड़ों में विभाजित करके नहीं रखा जाता है बल्कि आधिगम के लिये पूरी की पूरी समस्या को एक साथ बालक के सामने प्रस्तुत किया जाता है।

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

कौह्लर के अनुसार जब कोई बालक नवीन परिस्थिति में आधिगम करता है तो सबसे पहले अनुकूलन और संबंध स्थापित करता है।

इसके फलस्वरूप स्कार्क मानसिक प्रक्रिया में समस्या समाधान का जो प्रक्रिया संचालित है उसे ही स्वस्थ या अन्तर्दृष्टि का सिद्धान्त कहा जाता है।

स्वस्थ का सम्बन्ध - बुद्धि, चिन्तन, कल्पना से है। स्वस्थ एक ऐसी प्रतिक्रिया है जो स्कार्क उत्पन्न है और निरन्तर चलती रहती है। जब तक हमें लक्ष्य प्राप्त नहीं होती है।

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

## सामाजिक अधिगम का सिद्धान्त

प्रतिपादक - अल्बर्ट बण्डूरा (कनाडा)

प्रयोग - कुछ बच्चों पर (चलचित्र दिखाकर)

Book - [Social Learning & Personality Development]

- बण्डूरा को 20<sup>वीं</sup> सदी का सबसे प्रभावशाली चैपमनोवैज्ञानिक माना जाता है।



इस आधिगम सिद्धान्त में बण्डूरा ने बताया की भी बालक समाज की परिस्थितियों में उत्पन्न विभिन्न प्रकार के तत्वों का अनुकरण करके सीखता है। इस सिद्धान्त में सीखने की प्रक्रिया किसी दूसरे व्यक्ति को अनुक्रिया करने से प्रभावित होती है उससे अभिप्रेरित होकर बालक अनुकरण करना ही प्रारम्भ कर देता है।

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

बण्डूरा के अनुसार -

"आधिगम में पुनर्बलन मिल जाने

से अनुकरणात्मक क्षमता में वृद्धि हो जाती है।"

- 'बालक जो भी सीखता है वह समाज के माध्यम से सीखता'

## सामाजिक विकास का सिद्धान्त

प्रतिपादक - लेव सैम्योनोविच वाइगोत्सकी (रूस)

- इसे अन्य नाम से भी जाना जाता है।

- सामाजिक संरचना का सिद्धान्त

- सामाजिक सांस्कृतिक विकास का सिद्धान्त

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

इस सिद्धान्त के अन्तर्गत वाइगोत्सकी ने बताया कि बालक के प्रत्येक विकास पर उसके समाज का अहम योगदान होता है। उन्होंने बताया कि समाज से अन्तः क्रिया के परिणाम स्वरूप उसमें विभिन्न प्रकार का विकास सम्भव होता है। समाज में उसे सभी प्रकार की सुविधाओं का मूल-भूत रूप से उपलब्ध नहीं होगी तो उसके विकास



पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

- इन्होंने कहा विकास सामाजिक अन्तःक्रिया का परिणाम है।

## Z. P. D. की अवधारणा

Zone of Proximal development [निकटवर्ती विकास का क्षेत्र]

इस अवधारणा के अन्तर्गत किसी भी बालक का विकास तब तक सम्भव नहीं है। जब तक उसका सामाजिक विकास न हो जाए। किसी भी बालक के जन्म के समय उसका सामाजिक विकास नहीं होता है लेकिन धीरे-2 सामाजिकता का दायरा बढ़ता जाता है।

किसी भी सामाजिक आधिगम प्रक्रिया में वास्तविक क्षमता स्तर तथा कार्यकारिणी विकास के स्तर के अन्तर को ही निकटवर्ती विकास का क्षेत्र कहा जाता है।

## M. K. O. की अवधारणा

More Knowledge of Other -

कोई भी बालक उस व्यक्ति से सीखना चाहता है जो उससे अधिक ज्ञान या अनुभव रखता हो।

जैसे - प्रशिक्षक, कोच, शिक्षक आदि।





YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

- स्वैफोर्डिंग का हिन्दी अनुवाद टांचा, निर्माण है।

इसका तात्पर्य है, छात्रों को सीखने और समाधान के लिये दिये जाने वाले समर्पण से है। स्वैफोर्डिंग एक शिक्षण प्रक्रिया है जिसमें बच्चों को दिये जाने वाले निर्देश की मात्रा तथा स्वरूप उनके विकास के स्तर के अनुरूप होता है।

- यह वाइगोत्सकी के सामाजिक विकास सिद्धान्त का एक भाग है।

## चिन्ह अधिगम सिद्धान्त



- प्रतिपादक - **एडवर्ड चैस टॉलमैन** (U.S.A.)
- प्रचार - **1932**
- प्रयोग - **चूहा**

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

टॉलमैन ने चूहे पर शोध कार्य करते हुये इसे एक बॉक्स में बन्द कर दिया। जिसमें कुछ रोटी के टुकड़ों पर चूहे के मस्तिष्क में चिन्ह बन गये उसी से चूहे ने सीखना प्रारम्भ कर दिया। इस सिद्धान्त को **आधिगम प्रत्याशा**

**सिद्धान्त** या **प्रध्वन्न आधिगम सिद्धान्त** कहा जाता है।

टॉलमैन के अनुसार आधिगम में प्राणी यह सीखता है कि कौन सा उपदीपक उसे कहा ले जा रहा है। अर्थात् सीखने की प्रक्रिया में कोई एक उपदीपक उसे कहा ले जा रहा है अर्थात् सीखने की प्रक्रिया में कोई भी



एक उद्दीपक से दूसरे उद्दीपक से तथा दूसरे से तीसरे उद्दीपक इसी क्रम में सम्बन्ध बना लेता और सीखना प्रारम्भ कर देता है।

## संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त

प्रतिपादक - जिन व्याप्ते (स्वीट्जरलैंड)

प्रयोग - अपने बच्चे पर (उबच्चे)

1. संवेदी पेशीय गामक अवस्था /

इन्द्रिय जनित गामक अवस्था - (0-2 वर्ष)

विशेषताएँ -

इस अवस्था में बालक अपनी संवेदनाओं और शारीरिक क्रियाओं के द्वारा ज्ञान प्राप्त करते हैं।

- अनुकरण की प्रवृत्ति
- मूल प्रवृत्त्यात्मक व्यवहार
- वस्तु स्थायित्व (20 माह में पहचानता)
- परावर्ती क्रिया
- इन्द्रियों द्वारा आधिगम (शारीरिक क्रियाओं से ज्ञान अर्जन)
- नार्सिज्म की भावना (आत्म प्रेम)

- इसे Sensory Motor Stage के नाम से भी जाना जाता है।



## 2. पूर्व संक्रियात्मक अवस्था or

प्राक् संक्रियात्मक अवस्था — (2-7 वर्ष)

[Pre-Operational Stage]

इस अवस्था में बालक स्वकेंद्रित व स्वार्थी न होकर दूसरों के सम्पर्क से ज्ञान आर्पित करना प्रारम्भ कर देता है। इसकी विशेषताएं निम्न हैं।

- प्रतीकात्मक विचार
- सही अनुपात में अन्तर न कर पाना
- सजीवता का गुण
- आविलोमीयता / अपलटावीपन

इस अवस्था में बालक खेल के प्रति अत्यधिक रुचि रखता है।

## 3. मूर्त संक्रियात्मक अवस्था

(7-11 वर्ष)

[Concrete Op. Stage] —

इस अवस्था में बालक विद्यालय जाना प्रारम्भ करता है। वस्तुओं एवं घटनाओं के बीच समानता एवं भिन्नता समझने की क्षमता उत्पन्न होती है। इस अवस्था में बालक में निम्न विशेषताएं पायी जाती हैं।

- पलटावीपन / विलोमीयता
- तर्क पर आधारित चिन्तन
- मूर्त चिन्तन
- सही अनुपात में अन्तर कर पाना
- वर्गीकरण



#### 4. अमूर्त / औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था

[Formal Operational Stage] -

(11-15 वर्ष)

- अमूर्त चिन्तन करने की क्षमता का विकास।
- समस्या समाधान की क्षमता का विकास।
- वास्तविकता एवं अवास्तविकता में अन्तर कर पाना।
- संकल्पना या परिकल्पना का निर्माण।
- अपसारी चिन्तन।

#### महत्वपूर्ण बिन्दु -

- संज्ञानात्मक विकास का अर्थ है बच्चों के सीखने और सूचनाएँ एकत्रित करने के तरीके से।
- पूर्व ज्ञान के साथ नवीन ज्ञान को जोड़ने की प्रक्रिया को 'आत्मसातकरण' कहते हैं।
- जब बालक अपने पुराने स्कीमा अर्थात् ज्ञान में परिवर्तन करना प्रारम्भ कर देता है तो वह प्रक्रिया 'समायोजन' कहलाती है।
- वातावरण के साथ खुद को ढालना 'अनुकूलन' कहलाता है।
- वह प्रक्रिया जिसके द्वारा संज्ञानात्मक संरचना को संगठित किया जाता है 'समावेशन' कहलाता है।

#### स्कीमा -

पुराने ज्ञान में संशोधन एवं नयी चीजों को स्वीकार करना स्कीमा कहलाता है।



# नैतिक विकास का सिद्धान्त

[Moral Development theory]

प्रतिपादक - लारेन्स कोह्लबर्ग (U.S.A.)

प्रतिपादन - 1958

बालक को समाज द्वारा स्वीकृति और मान्य सामाजिक परम्पराओं, प्रथाओं, रिति-रिवाजों एवं नियमों से परिचित करवाने की प्रक्रिया ही नैतिक विकास कहलाती है।

नैतिक विकास जन्मजात नहीं होता है इसे सामाजिक परिवेश से सीखा या अर्जित किया जाता है।

सर्वप्रथम बालक का अनौपचारिक रूप से अपने आस-पास तथा स्कूल में नैतिक विकास होता है। निःसन्देह बच्चा पहले पुरस्कार, दण्ड, प्रशंसा या निंदा के द्वारा अच्छे आचरण सीखता है। और बुरे आचरण का त्याग करता है।

किशोरावस्था में उसके अन्दर विवेक का विकास होता है और इसी व्यवहार के आधार पर वह नैतिक व्यवहार सीख जाता है। जब नैतिक विकास के बाह्य स्त्रोत समाप्त हो जाते हैं तो वह आन्तरिक स्त्रोत द्वारा नैतिक व्यवहार सीखने का प्रयास करता है।



## नैतिक विकास के स्तर

कोह्लबर्ग के अनुसार नैतिक विकास के 3 स्तर बताये गये हैं।

### 1. पूर्व परम्परागत स्तर (4-10 वर्ष)

[Pre- Conventional stage]

जब बालक बाहरी तत्व या घटना के आधार पर किसी व्यवहार को नैतिक या अनैतिक मानता है तो उसे पूर्व - परम्परागत स्तर कहा जाता है।

i) आज्ञा एवं दण्ड की अवस्था

ii) अहंकार की अवस्था

### 2. परम्परागत स्तर (10-13 वर्ष)

(Conventional stage)

इस अवस्था में बच्चों का व्यवहार उनके माता-पिता या किसी बड़े व्यक्ति द्वारा बनाये गये नियमों पर आधारित होता है।

i) प्रशंसा की अवस्था

ii) सामाजिक व्यवस्था के प्रति सम्मान की अवस्था

Ex. अच्छा लड़का या अच्छी लड़की होना।



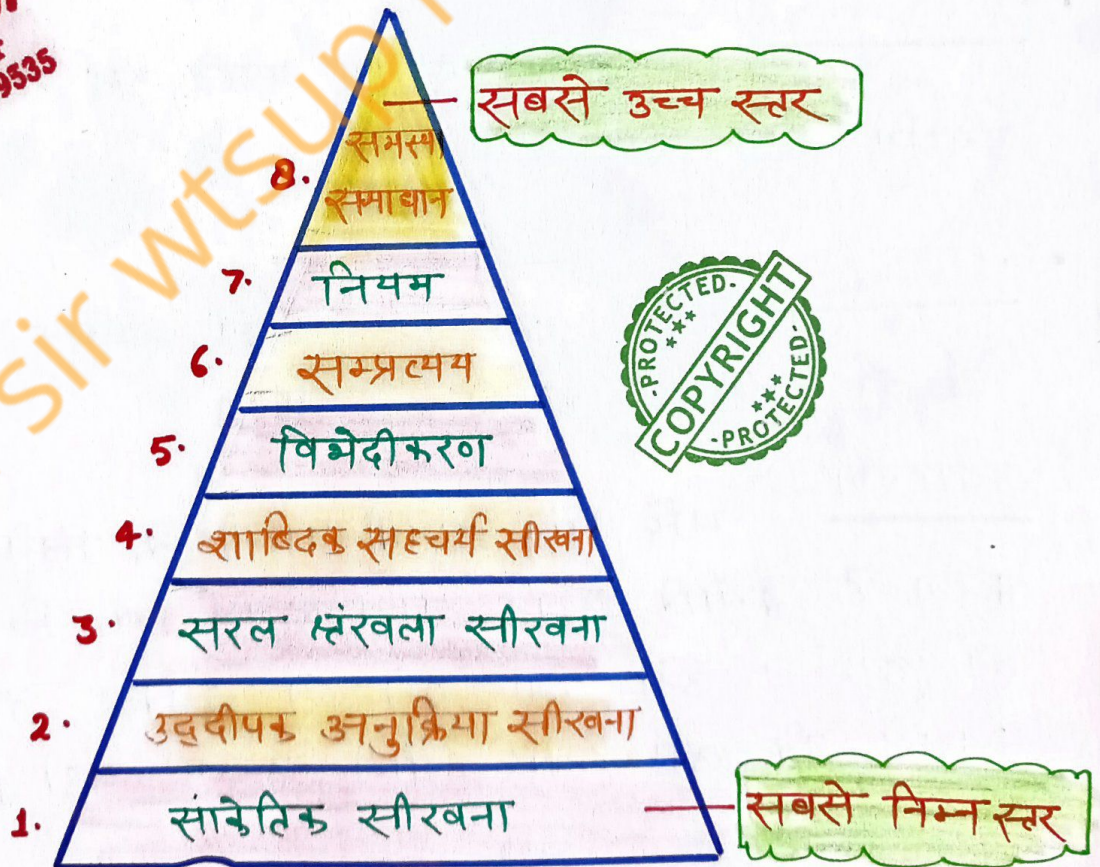
# अधिगम की अष्टपदीय अवधारणा

प्रतिपादक - आर. एम. जैने (1965)

Book - The Condition of Learning

जैने ने अपनी रचना में (1965) सीखने की अष्टस्तरीय श्रृंखला का प्रतिपादन किया। इस श्रृंखला में सबसे ऊपर 'समस्या समाधान सीखना' तथा सबसे नीचे 'सांकेतिक सीखना' आता है।

इस पिरामिड में जैने ने 8 पदों का निर्माण किया है।





3. गैर परम्परागत स्तर or

उत्तर परम्परागत स्तर or (13 वर्ष से ऊपर)

पश्च परम्परागत स्तर  
(Post Conventional stages)

इस अवस्था में नैतिकता स्वचेष्टित होती है।

i) सामाजिक समझौते की अवस्था

ii) सार्वभौमिकता की अवस्था

सहत्वपूर्ण बिन्दु -

• नैतिक तर्कणा -

इसका संबंध सही या गलत में से  
निर्णय लेने से है।

• नैतिक दुविधा -

दो या दो से अधिक नैतिक कार्यों  
में से किसी एक को चुनना।

उदाहरण -

यदि हिंज अपनी पत्नी के लिये दवाई चोरी  
करता है क्योंकि उसके पास दवाई के लिये पैसे नहीं  
थे डा. ने उसे दवा देने से इनकार कर दिया  
पिससे कि उसे दवाई चोरी करना पड़ी।



### 1. सांकेतिक सीखना -

सांकेतिक सीखने से आशय है किसी उद्दीपक के प्रति स्वाभाविक अनुक्रिया करना या सीख लेना पाँवलाव के शास्त्रीय अनुबन्धन में घण्टी की आवाज सब तटस्थ उद्दीपक और भोजन स्वाभाविक उद्दीपक के साथ कुछ प्रयास से जुला मात्र घण्टी की आवाज पर भार गिराना सीख लेना है।

### 2. उद्दीपक अनुक्रिया सीखना -

इस प्रकार के सीखने में बालक किसी उद्दीपक या उत्तेजना के प्रति ऐसी प्रतिक्रिया करना सीख लेता है जो सुरक्षित होती है।

### 3. सरल श्रृंखला सीखना -

इस प्रकार के सीखने में कई छोटी-2 अनुक्रियाएँ सब क्रम में सम्मिलित होती हैं। इस प्रकार के सीखने को पेशीय सीखना भी कहते हैं।

### 4. शाब्दिक साहचर्य सीखना -

इस स्तर के सीखने में शिक्षार्थी सब विशेष क्रम में शाब्दिक साहचर्य सीखता है। जैसे - कविता, कहानी, शब्दावली सीखना आदि।

### 5. विभेदीकरण सीखना -

इस प्रकार के सीखने से आशय उस शिक्षण से है जिसमें व्यक्ति विभिन्न उत्तेजनाओं या विषयों के बीच अन्तर करना सीखता है।

जैसे - आयत और वर्ग में अन्तर।



## 6. सम्प्रत्यय सीखना -

सरल सम्प्रत्यय तथा जटिल सम्प्रत्यय जिस प्रक्रिया द्वारा सीखते हैं उसे सम्प्रत्यय कहते हैं।

## 7. नियम सीखना -

इस प्रकार के सीखने के अन्तर्गत विभिन्न नियमों का सीखना सम्मिलित किया जाता।  
जैसे - व्याकरण, ज्यामितीय, गणित आदि।

## 8. समस्या समाधान -

इस प्रकार के सीखने का अर्थ है किसी नियम का प्रयोग करके समस्याओं का समाधान करना।

## क्रमबद्ध व्यवहार का सिद्धान्त

- प्रतिपादक - C. L. हल (U.S.A.)
- मेल विश्वविद्यालय के प्रोफेसर
- प्रतिपादन - 1943
- संशोधन - 1953

### Books -

- Essential of Behaviour (1943)
- A Behaviour system (1952)



यह सिद्धान्त अन्य नामों से भी जाना जाता है।

- प्रबलन सिद्धान्त
- सबलीकरण सिद्धान्त
- पुनर्बलन सिद्धान्त [Reinforcement Theory]
- अन्तर्नेद-सूना का सिद्धान्त [Drive Reduction Theory]
- लक्ष्य ढाल सिद्धान्त [Goal Gradient Theory]
- परिष्कृत सिद्धान्त [Refind Theory]
- यथार्थ सिद्धान्त [Precise Theory]

प्राणी वास्तव में स्वसंचालित समस्या समाधान प्रणाली है, आधिकार प्राणी अपनी जैविकीय समस्याओं के समाधान में लगे रहते हैं। यह समस्या मूलतः उनकी आवश्यकता से जुड़ी रहती है। यदि उसे भोजन और पानी मिल जाता है तो उसकी तत्कालीन जैविकीय समस्या समाप्त हो जाती है।

- हल द्वारा यह निष्कर्ष निकाला गया कि उपदीपक और अनुश्रिया के बीच सम्बन्ध अन्तर्नेद पर निर्भर करता है।
- आवश्यकता के कारण प्राणी में तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर प्राणी में अनेक उत्तेजनाएँ उत्पन्न होती हैं जो उसे लक्ष्य तक पहुँचाती हैं।



## समीपता का सिद्धान्त

- प्रतिपादक - रूडोल्फ़ र्गुप्परी (U.S.A.)
- प्रयोग - बिल्ली

इसके अन्य नाम भी हैं।

- समीप्य का सिद्धान्त
  - प्रतिस्थापन का सिद्धान्त
  - रुद्धिबद्ध व्यवहार का सिद्धान्त
- [Theory of Substitution]

इस सिद्धान्त की मान्यता है कि उद्दीपक और अनुक्रिया के बीच पुनर्बलन के आधार पर सादृश्य स्थापित नहीं होता बल्कि समीपता के आधार पर होता है।

गुप्परी ने आधिगम में कुशलता में पुरस्कार को महत्व नहीं दिया है।

### प्रयोग -

गुप्परी ने एक अन्य मनोवैज्ञानिक हार्टन के साथ मिलकर कार्य इसलिये इस प्रयोग को 'गुप्परी हार्टन प्रयोग' भी कहते हैं।

इन्होंने अपने प्रयोगों में एक ऐसी पहेली पेटिका का निर्माण किया जिसके मध्य में एक लीवरनुमा दंड या (पोल) लगा हुआ था। इस वृत्त पर बिल्ली के किसी



किसी भी अंग के स्पर्श पर पैटिका का दरवाजा खुल जाने पर बिल्ली बाहर निकलकर भोजन कर सकती थी।

पैटिका शीशे की बनी हुयी प्रयोग में कुल 800 छायाचित्र लिये गये तथा उनका ध्यानपूर्वक अध्ययन किया गया।

### गुप्ती के अनुसार

प्राणी किसी भी परिस्थित में कई प्रकार की अनुक्रिया करता परन्तु उसी प्रकार की परिस्थित में पुनः रहने पर अंतिम परिस्थित में की गयी अंतिम सफल अनुक्रिया को दोहराता है।

इसे गुप्ती ने नवीनता का नियम भी कहा है।



## अधिगम अक्षमता

बच्चों द्वारा सीखने, सुनने, पढ़ने, लिखने, बोलने, तर्कशक्ति या गणितीय कौशल के प्रयोग करने में अक्षमता को ही अधिगम अक्षमता कहते हैं। इसे अधिगम अक्षमता / अधिगम निर्मोक्षता भी कहते हैं।

### अधिगम अक्षमता के प्रकार -

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

#### 1. पठन सम्बन्धी विकार -

डिस्लेक्सिया - (पूर्ण रूप से)

अलेक्सिया - (आंशिक रूप से)

#### 2. लेखन सम्बन्धी विकार -

डिस्ग्राफिया - (पूर्ण रूप से)

अग्राफिया - (आंशिक रूप से)

#### 3. गणित सम्बन्धी विकार -

डिस्कैलकुलिया

#### 4. चिंतन सम्बन्धी विकार -

डिस्प्रैक्सिया

अप्रैक्सिया

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535



5. मौखिक स्वीकृति में असमता

डिस्फेज्या

अफेज्या

6. तनाव संबंधी विकार

डिस्चीमिया

7. शारीरिक भ्रम संबंधी विकार

डिस्मोरफिया

## वैयक्तिक विभिन्नता

Book - Hereditary Genius - फ्रांसिस गाल्टन (1869)

व्यक्तिगत विभिन्नता का सर्वप्रथम प्रयोग फ्रांसिस गाल्टन के द्वारा किया गया। व्यक्तिगत विभिन्नता के कारण ही कुछ व्यक्ति शीघ्र हजारी रुपये कमाता हैं। दूसरे केवल कुछ रुपये कमाने में भी असमर्थ होते हैं। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक योग्यताएँ एक समान न होकर भिन्न-2 होती हैं।

रिक्टर के अनुसार -

"व्यक्तिगत विभिन्नता के अध्ययन में व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व में किसी भी मापने योग्य पहलू को शामिल करते हैं।"



## व्यक्तिगत विभिन्नता के प्रकार -

- शारीरिक विकास
- मानसिक विकास
- सांवेगिक विभिन्नता
- सामाजिक विकास में विभिन्नता
- भाषा विकास में विभिन्नता
- व्यक्तित्व विकास में विभिन्नता

## वैयक्तिक विभिन्नता के कारण -

- वंशानुक्रम
- वातावरण
- आर्थिक स्थिति एवं शिक्षा
- प्रजाति एवं राष्ट्रियता
- आयु एवं लुब्ध



## स्मृति [Memory]

स्मृति एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है इसकी सहायता से हम अपने विगत अनुभवों को जो कि मानसिक संस्कार के रूप में हमारे अचेतन मन में विद्यमान रहते हैं।  
धिनकी आवश्यकता पड़ने पर वर्तमान चेतना में लाते हैं।  
हमारे व्यावहारिक जीवन में अनेक प्रकार की घटनायें घटित होती हैं। उनसे कुछ अनुभव प्राप्त करते हैं, जो कि हमेशा चेतन में नहीं रहते बल्कि अचेतन में विद्यमान रहते हैं।

### परिभाषायें -

#### - बुडवर्थ के अनुसार -

" स्मृति सीखी हुयी वस्तु का सीधा उपयोग है । "

#### - मैकडुगल के अनुसार -

" स्मृति से तात्पर्य अतीत की घटनाओं के अनुभव की कल्पना और इस तथ्य को पहचान लेना कि यह अतीत कालीन घटना है । "

#### - नन के अनुसार -

" हमारे अनुभवों को संग्रहित करने रखने वाली शक्ति जब चेतना से युक्त होती है तब हम उसे स्मृति कहते हैं । "



## स्मृति के अंग -

पुंडर्वर्ण के अनुसार स्मृति के 4 अंग हैं।

- सीखना
- धारण करना
- पुनः स्मरण
- पहचान

## स्मृति के प्रकार -

- तात्कालिक स्मृति
- स्थायी स्मृति
- सक्रिय स्मृति
- निष्क्रिय स्मृति
- रतन्त स्मृति
- संवेगात्मक स्मृति
- तार्किक स्मृति / बौद्धिक स्मृति

## स्मृति के नियम -

- आदत का नियम
- निरन्तरता का नियम
- परस्पर सम्बन्ध का नियम
- सहचर्य का नियम





किसी सीरवे हुये ज्ञान को स्मरण न कर सकना विस्मृति कहलाती है। हमारे व्यावहारिक जीवन में अनेक ऐसी घटनाएँ होती हैं, जिन्हें हम भूल जाते हैं। मनुष्य के सफल जीवन के लिये स्मृति जितनी आवश्यक है उतनी ही विस्मृति भी आवश्यक है, क्योंकि कष्टकारी अनुभवों को भूल जाना ही अच्छा होता है, इससे मानसिक विकार एवं तनाव दूर हो जाते हैं।

## परिभाषा -

### - मन के अनुसार -

"ग्रहण किये गये या सीरवे हुये तत्वों को धारण करने या पुनः स्मरण करने की असफलता को विस्मृति कहते हैं।"

### - जेम्स ड्रेवर के अनुसार -

"विस्मरण का अर्थ - किसी समय प्रयत्न करने पर भी किसी पूर्व अनुभव का स्मरण करने या पहले की सीरवी हुयी किसी क्रिया को करने में असफलता।"

### - फ्रॉयड के अनुसार -

"विस्मरण वह प्रवृत्ति है जिसके द्वारा दुःखद अनुभवों को स्मृति से निकाल दिया जाता है।"



# विस्मृति के प्रकार.

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535



- i) सक्रिय विस्मृति
- ii) निष्क्रिय विस्मृति

## 1. सक्रिय विस्मृति -

जब किसी व्यक्ति को किसी घटना को भूलने के लिये प्रयास करना पड़े 'सक्रिय विस्मृति' कहते हैं।

## 2. निष्क्रिय विस्मृति -

जब व्यक्ति किसी तथ्य या घटना को स्वयं भूल जाता है। तो इसे निष्क्रिय विस्मृति कहा जाता है।

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

### विस्मृति के कारण

#### सैद्धान्तिक कारण

- बाधा का सिद्धान्त
- दमन का सिद्धान्त
- अनाभ्यास का सिद्धान्त

#### रुमानान्य कारण

- विषय की मात्रा
- विषय का स्वरूप
- समय का प्रभाव
- सीखने की दोषपूर्ण पद्धति
- अभिरुचि
- मांसिद्ध चोट
- मांसिद्ध झटका



### 1. बाधा का सिद्धान्त -

इस सिद्धान्त के प्रतिपादक **मूलर एवं बुडवर्थ** हैं। इन मनोवैज्ञानिकों के विचारों में व्यक्ति के नए अनुभव प्राचीन संस्कारों के प्रत्यास्मरण में बाधक होते हैं। अर्थात् नवीन अनुभवों को बाधा पहुँचाने से पुराने अनुभव विस्मृत हो जाते हैं।

### 2. दमन का सिद्धान्त -

**फ्रॉयड एवं जेम्स डी. इत्यादि** मनोवैज्ञानिकों ने दमन के सिद्धान्त को प्रस्तुत किया। इन मनोवैज्ञानिकों के विचारों में व्यक्ति को स्तुति प्रदान करने वाली घटनाओं की स्मरण रखना चाहिए। तथा अप्रिय बातों को भूल जाना चाहिए।

### 3. अनाभ्यास का सिद्धान्त -

**इसके प्रतिपादक एबिंगहास** हैं।

उन्होंने विस्मृति को एक निष्क्रिय मानसिक प्रक्रिया बताया है। जब कोई व्यक्ति किसी विषय सामग्री को याद करता है। परन्तु बहुत दिनों तक पुनः स्मरण नहीं करता है। तो उसको भूल जाता है। इस प्रकार अभ्यास का प्रभाव भी विस्मृति का कारण बनता है।



## अभिरुचि [Interest]

- अभिरुचि शब्द लैटिन भाषा के ~~इंटेसी~~ शब्द से बना है
- जिसका अर्थ है लगाव होना / महत्वपूर्ण होना ।

रुचि शब्द अंग्रेजी भाषा के **Interest** का हिन्दी रूपान्तरण है।  
**Interest** शब्द की उत्पत्ति **लैटिन भाषा के इंटेसी** शब्द से हुयी । इसका अर्थ **लगाव होना / महत्वपूर्ण होना** ।

अभिरुचि एक आंतरिक प्रेरक शक्ति है जो हमें ध्यान देने के लिये किसी वस्तु, व्यक्ति या क्रिया के प्रति प्रेरित करती है । अभिरुचि एक ऐसी मानसिक संरचना है जिसके द्वारा व्यक्ति किसी वस्तु से अपना लगाव या संबंध प्रकट करता है ।

### परिभाषा -

- जेम्स ड्रेवर के अनुसार -

"अभिरुचि अपने क्रियात्मक रूप में एक मानसिक संस्कार है ।"

- बी. एन. स्नो के अनुसार -

"रुचि वह मानसिक विधि है, जो ध्यान क्रिया को सतत बनाये रखती है ।"

- क्रो & क्रो के अनुसार -

"रुचि एक प्रेरक शक्ति है जो किसी व्यक्ति, वस्तु या क्रिया के प्रति हमारा ध्यान आकर्षित करती है ।"



विधिम के अनुसार -

"रुचि वह प्रवृत्ति है जिसके फल -

स्वरूप बालक किसी विषय वस्तु को तल्लीनता से पुरा करता है।"

## रुचि के स्रोत

रुचि के दो स्रोत हैं।

- जन्मजात स्रोत
- अर्पित स्रोत

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.-6393339535

### जन्मजात स्रोत -

इसके अन्तर्गत मूल प्रवृत्ति, जन्मजात प्रेरणायें, इच्छायें आवश्यकतायें होती हैं जिसके कारण जन्मजात जन्म से ही स्वाभाविक रूप से कुछ वस्तुओं में रुचि लेने लगता है।

### अर्पित स्रोत -

अभिरुचि का कारण अर्पित संस्कार भी होते हैं अर्पित संस्कारों के अन्तर्गत आदतें, भाव, स्वभाव, एवं सुभाव सम्मिलित किसे जाते हैं।

### अभिरुचि को ज्ञात करने की विधियाँ -

- क्रियाओं के द्वारा
- प्रश्नों के द्वारा
- मानकीकृत परीक्षणों के द्वारा



## अवधान (ध्यान)

ध्यान या अवधान से तात्पर्य सम्बन्धित व्यक्ति के द्वारा संवेदनाओं और मानसिक शक्ति को किसी एक उद्दीपक अथवा किन्हीं उद्दीपकों पर केन्द्रित करने से होता है।

चेतना को किसी वस्तु विशेष पर केन्द्रित करना ही अवधान है। यहाँ वस्तु विशेष का चुनाव करके उस पर चेतना को केन्द्रित करना होता है। यह चयनात्मक प्रक्रिया ही अवधान कहलाती है।

**YOUTH FOR STUDY**  
Er. Manish Sir  
Wtsup No. -6393339535

### परिभाषा -

#### • रॉस के अनुसार -

"अवधान विचार को मस्तिष्क के सामने स्पष्ट रूप से लाने की प्रक्रिया है।"

#### • डमविल के अनुसार -

"किसी इसरी वस्तु की अपेक्षा एक वस्तु पर चेतना का केन्द्रीकरण ही अवधान है।"

#### • मैकडूगल के अनुसार -

"अवधान उस इच्छा या चैतना को कहते हैं जिसका प्रभाव हमारी ज्ञान प्रक्रिया पर पड़ता है।"

### अवधान के कारक

- बाह्य कारक
- आन्तरिक कारक



## बाह्य कारक -

- उद्दीपक की तीव्रता
- उद्दीपक की नवीनता
- उद्दीपक की विषमता
- उद्दीपक का आकार
- उद्दीपक की पुनरावृत्ति
- उद्दीपक में परिवर्तन
- उद्दीपक की अवाधी

## आन्तरिक कारक -

- रुचि / अभिरुचि
- मूल प्रवृत्तियां
- आवश्यकता
- स्वभाव
- आदत
- लक्ष्य
- विज्ञान

**YOUTH FOR STUDY**  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.-6393339535

## अवधान के पक्ष -

1. ज्ञानात्मक पक्ष
2. क्रियात्मक पक्ष
3. भावात्मक पक्ष



## मूल प्रवृत्ति

मानव प्राणी जन्म लेने के बाद से ही अपनी आवश्यकताओं एवं वातावरण से प्रभावित होकर किसी न किसी प्रकार का व्यवहार करना आरम्भ कर देता है। इनमें से कुछ व्यवहार ऐसे होते हैं जो जन्मजात और स्वाभाविक शक्तियों के कारण होते हैं। उसका व्यवहार विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न-2 प्रकार का होता है। यह जन्मजात शक्तियाँ जो प्राणी मात्र के व्यवहार को संचालित करती हैं। मूल प्रवृत्तियाँ कहलाती हैं।

- मूल प्रवृत्ति सिद्धान्त के व्यवस्थित प्रतिपादक का श्रेय 'विलियम मैक्डूगल' को जाता है। मैक्डूगल ने 1908 ई० में यह बताया कि मनुष्य भी प्रवृत्तियों का दास है जैसे कि पशु होता है।

**YOUTH FOR STUDY**

Er. Manish Sir

Wtsup No.-6393339535

मैक्डूगल के अनुसार -

" मूल प्रवृत्ति उद्देश्य पूर्ण करने की सहज एवं जन्मजात क्षमता है । "

- मैक्डूगल द्वारा प्रतिपादित यह सिद्धान्त 'हार्मिक थ्योरी ऑफ बिहेवियर' के नाम से जाना जाता है।

Book - 'An Introduction to Social Psychology'



## परिभाषाएँ -

### मैकडूगल के अनुसार -

" मूल प्रवृत्तियाँ वे प्रकृति द्वारा प्रदत्त शक्तियाँ हैं जो हमें व्यवहार करने के लिये प्रेरित करती हैं ।"

### बुडवर्प के अनुसार -

" मूल प्रवृत्ति क्रिया करने का बिना सीरवा हुआ रूप है ।"

### वैलेन्टाइन के अनुसार -

" मूल प्रवृत्ति वह स्वभाविक प्रवृत्ति है जो कुछ जैविकीय उद्देश्य को विशेष ढंग से क्रिया करके पूरा करती है ।"

## मूल प्रवृत्ति के पक्ष

**YOUTH FOR STUDY**

Er. Manish Sir  
Wtsup No.-6393339535

### 1. ज्ञानात्मक पक्ष -

किसी विषय वस्तु का ज्ञान होना ।

### 2. भावात्मक पक्ष -

ज्ञान के कारण संवेगों का उत्पन्न होना या भावों का उत्पन्न होना ।

### 3. क्रियात्मक पक्ष -

उत्पन्न हुये संवेगों के कारण किसी क्रिया को करना ।



## मूल प्रवृत्तियों के प्रकार

**YOUTH FOR STUDY**  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

मूल प्रवृत्तियों के वर्गीकरण में सिगमंड, फ्रॉयड, बुडवर्प एवं अनेक मनोवैज्ञानिकों ने किया किन्तु मैन्डूगल द्वारा किया गया मूल प्रवृत्तियों का वर्गीकरण मौलिक एवं सर्वमान्य है। इन्होंने 14 प्रकार की मूल प्रवृत्तियों को बताया है। और प्रत्येक मूल प्रवृत्ति से सम्बन्धित 1 संवेग होता है।

### मूल प्रवृत्ति

1. पलायन (भागना)
2. मुमुत्सा (मुझ प्रवृत्ति)
3. आप्रियता / निवृत्ति
4. पुत्र कामना
5. शरणागत
6. पिजासा
7. काम प्रवृत्ति
8. आत्मप्रदर्शन / आत्मस्थापना
9. दया / दैन्य / विनीत भाव
10. सामूहिकता / समूह प्रवृत्ति
11. भोजनान्वेषण / भोजन की इच्छा

### संवेग

- भय
- क्रोध
- घृणा
- वात्सल्य (प्रेम)
- कष्ट (पीड़ा)
- आश्चर्य
- कामुकता
- आत्मनिम्मान / लोभता भावना
- अधीनता की भावना
- रुकावट
- भूख

**YOUTH FOR STUDY**  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535

**YOUTH FOR STUDY**  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.- 6393339535



12. संग्रह प्रवृत्ति

आधिकार की भावना

13. रचना

रचना की अनुमति / कृति भाव

14. हास्य

आमोद / आनन्द

### मूल प्रवृत्तियों की विशेषताएँ -

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.-6393339535

- मूल प्रवृत्तियाँ जन्मजात होती हैं।
- मूल प्रवृत्तियाँ उद्देश्यपूर्ण होती हैं।
- मूल प्रवृत्तियों के साथ एक संवेग अवस्था जुड़ा होता है।
- मूल प्रवृत्तियाँ कभी नष्ट नहीं होती हैं।
- मूल प्रवृत्तियाँ सभी प्राणियों में एक समान पायी जाती हैं।
- मूल प्रवृत्तियाँ आदत से भिन्न होती हैं।

• भारतीय मनोवैज्ञानिकों ने केवल 2 प्रकार के संवेग स्वीकार किये हैं -

#### 1. रागात्मक संवेग -

सम्मान, भ्रद्धा, भास्ति, मित्रता, प्रेम, स्नेह, वात्सल्य, दया, गर्व आदि।

#### 2. द्वेषात्मक संवेग -

भय, ईर्ष्या, धृणा, क्रोध, कायरता, जलन, आधिकार, इत्यादि।



## संवेग [Emotion]

संवेग शब्द अंग्रेजी के Emotion शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है।

Emotion शब्द लैटिन भाषा के Emovere (इमोवेयर) शब्द से बना है। जिसका अर्थ है - 'उत्तेजित होना'।

- पुड्गर्घ के अनुसार -

"संवेग व्यक्ति की उत्तेजित दशा है।"

- क्रो & क्रो के अनुसार -

"संवेग गतिशील आन्तरिक समायोजन है जो व्यक्ति के संतुष्ट, सुरक्षा एवं कल्याण के लिये कार्य करता है।"

संवेग के प्रकार -

1. शय
2. क्रोध
3. प्रेम
4. पीड़ा
5. कामुक्ता
6. आश्चर्य
7. आत्मनिम्नता
8. आत्महीनता
9. रुकावट
10. भ्रम
11. आघात
12. रचना
13. आनन्द / आनंद
14. अधीनता की भावना



## सामान्य प्रवृत्तियां

मूल प्रवृत्तियों के अतिरिक्त व्यक्ति में कुछ स्वाभाविक प्रवृत्तियां भी पायी जाती हैं। जो विशिष्ट न होकर सामान्य रूप की होती हैं यह सामान्य परिस्थितियों में व्यवहार की सामान्य रीतियों के रूप में हैं जिनमें विभिन्न मूल प्रवृत्तियां प्रकट होती हैं।

रायबर्न के अनुसार -

" सामान्य प्रवृत्तियां मूल प्रवृत्तियां नहीं हैं पर ऐसी विधियां हैं जिनके द्वारा अनेक प्रकार का व्यवहार जागृत किया जाता है। "

## अनुकरण

**YOUTH FOR STUDY**  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.-6393339535

बालक के विकास क्रम में अनुकरण महत्वपूर्ण स्थान है। अनुकरण का सामान्य अर्थ है किसी व्यक्ति या समूह के कार्य व्यवहार या गुणों की चेतन या अचेतन नकल करना।

रॉस के अनुसार -

" अनुकरण सामूहिक भावना या क्रियात्मक पक्ष है जिसके द्वारा समूह के सभी सदस्य एक साथ कार्य करते हैं। "

मीड के अनुसार -

" दूसरों के कार्यों या व्यवहारों को जानबूझकर अपनाना अनुकरण है। "



## अनुकरण के प्रकार

जेम्स ड्रेपर के अनुसार अनुकरण के दो प्रकार हैं -

### चेतन अनुकरण -

किसी दूसरे के कार्यों को अपना चेतन अनुकरण कहलाता है।

### अचेतन अनुकरण -

" न चाहे हुये दूसरे के कार्यों व्यवहारों का अनजाने में अनुकरण कर स्वयं में परिवर्तन लाता है। "

## सहानुभूति

**YOUTH FOR STUDY**  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.-6393339535

सहानुभूति दूसरे व्यक्ति के स्थान पर अपने को समझने का और किसी विशेष परिस्थिति में जैसा वह अनुभव करेगा वैसा स्वयं में अनुभव करने की क्षमता है।

### रॉस के अनुसार -

" सहानुभूति सामूहिकता सलप्रवृत्ति का भावपक्ष है। "

## सहानुभूति के प्रकार

निष्क्रिय - अनुभव करके विचारों भावों को व्यक्त करते हैं।

सक्रिय - हम, भाव, विचारों को व्यक्त करने के लिये साधन-2 करते हैं।



## निर्देश / सुझाव [Suggestion]

निर्देश एक मानसिक प्रक्रिया है, जब कोई बात उसकी अच्छाई व बुराई को समझे बिना स्वीकार कर लेती है। उस क्रिया को निर्देश कहते हैं। दैनिक जीवन में हम प्रायः दूसरों का कहना बिना तर्क किम्वदुसरे मान लेते हैं।

टी. पी. नन के अनुसार -

"बिना किसी इच्छा के दूसरों के विचारों को ग्रहण कर लेना निर्देश है।"

### निर्देश / सुझाव के प्रकार

- भाव-चालक निर्देश
- आत्मनिर्देश
- समूह निर्देश
- प्रहिष्ठा निर्देश
- विरुद्ध निर्देश

**YOUTH FOR STUDY**  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.-6393339535



## सृजनात्मकता

सृजनात्मकता का अर्थ है सृजन करना अथवा रचना संबंधी से है, प्रारम्भ में इस योग्यता का संबंध केवल रचनाओं या सृजन से माना जाता है। किन्तु आधुनिक मनोविज्ञान में इसका क्षेत्र व्यापक है। अर्थात् अब यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से संबंधित माना जाता है।

### परिभाषा -

**YOUTH FOR STUDY**  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.-6393339535

#### - जेम्स ड्रेवर के अनुसार -

"सृजनात्मकता मुख्यतः नवीन रचना या उत्पादन में होती है।"

#### - क्रो & क्रो के अनुसार -

"सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्ति करने की मानसिक योग्यता है।"

#### - कोल & बुश के अनुसार -

"सृजनात्मकता मौलिक उत्पादन के रूप में मानव मन की ग्रहण करने, अभिव्यक्ति करने, शुष्क करने की योग्यता है।"

J.P. गिलफोर्ड ने कारक विश्लेषण द्वारा सृजनात्मकता के सम्बन्ध में 5 बौद्धिक क्रियाओं का वर्णन किया है।



1. बोध, ज्ञान, अनुभव
2. स्मृति या धारण शक्ति
3. आभिसारी चिन्तन
4. अपसारी चिन्तन
5. मूल्यांकन

### सृजनशील बालको की विशेषताएं -:

- सृजनशील बालको में निम्नलिखित विशेषताएं पायी जाती हैं।
- क्रियाशीलता
- मौलिकता
- स्वतन्त्र निर्णय शक्ति
- बुद्धि लाघवी
- पितासा एवं स्त्री
- बोधगम्यता
- भाव-आभिव्यक्ति की क्षमता
- अन्तर्दृष्टि का होना
- विनोद प्रिय
- समायोजनशीलता
- संवेदनशीलता
- रसोन्दर्यात्मिक विकास

**YOUTH FOR STUDY**

Er. Manish Sir  
Wtsup No.-6393339535



## व्यक्तित्व [Personality]

- लैटिन भाषा का - *Persona*
- पिसका अर्थ है - नकली चेहरा । मुखौटा । नकाब

प्राचीन विचारधारा - बाह्य स्वरूप का अध्ययन  
(कढ़ावी, पहनावा, रंग-रूप, शारीरिक बनावट)

आधुनिक विचारधारा - बाह्य स्वरूप + आन्तरिक स्वरूप  
(शिक्षा, ज्ञान, व्यवहार, सम्प्रेषण, तर्क शक्ति, ग्राह्य क्षमता)

### परिभाषाएं -

**YOUTH FOR STUDY**

Er. Manish Sir

Wtsup No.-6393339535

- आलपोर्ट के अनुसार - "व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोदैहिक गुणों का गंत्मात्मक संगठन है, जो वातावरण के साथ अनूख समायोजन कर लेता है।"
- वैलेन्टाइन के अनुसार - "व्यक्तित्व जन्मजात एवं अर्पित प्रवृत्तियों का योग है।"
- बुडवर्थ के अनुसार - "व्यक्तित्व व्यक्ति की सम्पूर्ण गुणवत्ता है।"
- वाटसन के अनुसार - "हम जो कुछ करते हैं वही व्यक्तित्व है।"



## विभिन्न दृष्टिकोणों से व्यक्तित्व का अर्थ -

### दार्शनिक दृष्टिकोण -

दर्शन के अनुसार व्यक्तित्व आत्म-ज्ञान का दूसरा नाम है। यह पूर्णतः का प्रतीक है इसी पूर्णतः को व्यक्तित्व कहा जाता है।

**YOUTH FOR STUDY**

Er. Manish Sir

Wtsup No.-6393339535

### समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण -

व्यक्तित्व उन सभी तत्वों का संगठन है जिनके द्वारा व्यक्ति को समाज में कोई स्थान प्राप्त होता है यह व्यक्तित्व का सामाजिक प्रभाव है।

### मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण -

इस दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्तित्व का अर्थ वंशानुक्रम एवं वातावरण का ही रूप है।

पुडवर्क के अनुसार

"व्यक्ति के व्यवहार का समूचा सार ही उसका व्यक्तित्व होता है।"

### मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण -

इसके जन्मदाता सिगमंड फ्रायड है जिन्होंने व्यक्तित्व को 3 भागों में बांटा है।

इदम् -

सुरवादी सिद्धान्त अर्थात् भौतिक सुरव ।

यह जन्मजाति प्रवृत्ति का होता है इसमें मुख्य रूप से



मूल वासनायें, मूल प्रवृत्तियां एवं इच्छाएँ आती हैं।

इदम् किसी प्रकार का तनाव नहीं सकता है बिना किसी बाधा के तत्काल आनन्द, सुख एवं सन्तुष्टि प्राप्त करना चाहता है।

अहम् -

वास्तविकता, मयार्थजगत्, भौतिकजगत्

अहम् का तात्पर्य (मैं अथवा स्वा) से है जिसका अर्थ उन समस्त शारीरिक अथवा मानसिक शक्तियों से है जिसके कारण वह दूसरे से भिन्न है।

पराअहम् -

यह सामाजिक मान्यताओं, संस्कारों एवं आदर्शों से सम्बन्धित होता है तथा सामाजिक और राष्ट्रीय हित में व्यक्ति को त्याग एवं बलिदान हेतु तत्पर होता है।

व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करने वाले कारक -

1. वंशानुक्रम
2. वातावरण
3. शारीरिक संरचना
4. परिवार
5. विद्यालय

**YOUTH FOR STUDY**  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.-6393339535



## व्यक्तित्व के प्रकार

**YOUTH FOR STUDY**

Er. Manish Sir

Wtsup No.-6393339535

### 1. क्रेचमर / केशमर के अनुसार -

आधार - शारीरिक संरचना के आधार पर

1. पिकनिक - (गोलकाय / स्थूलकाय)
2. एस्थेनिक - (लम्बकाय / क्षीणकाय)
3. एथलेटिक - (आयताकार / सुडौलकाय)
4. डिस्प्लारिटिक - (मिश्रित)

### 2. शैल्डन के अनुसार -

आधार - शारीरिक संरचना के आधार पर

- एण्डोमोर्फिक - (गोलकाय)
- मीसोमोर्फिक - (सुडौलकाय)
- एक्टोमोर्फिक - (लम्बकाय)

### 3. युंग के अनुसार -

आधार - मनोवैज्ञानिक आधार पर

- अन्तर्मुखी - लेखक, शिक्षक, वैज्ञानिक
- बहिर्मुखी - शिक्षक, नेता
- उभयमुखी - शिक्षक



## वार्नर के अनुसार -

आधार - शारीरिक स्वास्थ्य एवं विकास के आधार

- स्नायु रोगी
- पिछड़ा तथा मंदबुद्धि
- मिर्गी रोगी
- घुस्तर स्फूर्ति
- सुस्तर
- अविकसित
- अंग-भंग
- अपरिपक्व

**YOUTH FOR STUDY**  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.-6393339535

## स्पैंगर / स्पैन्जर के अनुसार -

आधार - सामाजिक मूल्यों के आधार पर

- आर्थिक आधार पर
- शारीरिक आधार पर
- सामाजिक आधार पर
- सांस्कृतिक आधार पर
- धार्मिक आधार पर
- सौन्दर्यात्मक आधार पर

Trick - आशा राधा से सुन्दर है।



## कैनन के अनुसार -

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.-6393339535

आधार - अन्तः स्त्रावी ग्रन्थियों के आधार पर

### • थायराइड ग्रन्थि -

इससे निकलने वाला हार्मोन्स थायराइम्स है जिन व्यक्तियों में इस ग्रन्थि का विकास ठीक से नहीं हो पाता है वे व्यक्ति दुर्बल, मन्दबुद्धि, बौनेरुद के होते हैं। इस ग्रन्थि के ठीक से कार्य करने पर व्यक्ति स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त रहता है।

### • पिट्यूटरी ग्रन्थि -

इस ग्रन्थि से अधिक स्त्राव होने पर शरीर लम्बा तथा कम होने पर बौना हो जाता है। इसे मास्टर ग्रन्थि या पिबूब ग्रन्थि भी कहते हैं।

### • एड्रिनल ग्रन्थि -

इसका अधिक स्त्राव होने पर व्यक्ति अतृप्त एवं परिस्रमी स्वभाव के होते हैं। इस ग्रन्थि का विकास मानव व्यवहार की क्रियाशीलता पर निर्भर करता।

## भारतीय आयुर्वेद के अनुसार -

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.-6393339535

### • कफ प्रधान -

ये लोग मोटे, शान्त स्वभाव तथा परिस्रमी प्रवृत्ति के होते हैं।



- पित्त प्रधान -

ये लोग दुर्बल तथा चंचल स्वभाव के होते हैं तथा शीघ्र कार्य करने वाले होते हैं।

- वात प्रधान -

ये मध्यम शरीर वाले होते हैं न तुर्बल न मोटे प्रकृति के होते हैं।

## यूनानी विचारको के अनुसार -

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.-6393339535

शरीर में पाये जाने वाले 4 रसों के आधार पर व्यक्ति 4 प्रकार का होता है।

- शांत चित्त - ये लोग शांत प्रकृति के होते हैं।
- चिंतित - ये लोग निराशावादी होते हैं।
- उत्तेजनशील - ये लोग शीघ्रक्रोधीत वाले होते हैं।
- आभाशय / गंभीर - ये लोग उच्च आभिलाषी, प्रसन्न, आसावान और शीघ्र कार्य करने वाले होते हैं।

YOUTH FOR STUDY  
Er. Manish Sir  
Wtsup No.-6393339535